## श्री गायत्री जी की आरती

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता। सत् मारग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता॥ ॥ जयति जय गायत्री माता...॥

आदि शक्ति तुम अलख निरंजन जगपालक कर्जी। दु:ख शोक, भय, क्लेश कलश दारिद्र देन्य हत्री॥ ॥ जयित जय गायत्री माता...॥

ब्रह्म रूपिणी, प्रणात पालिन जगत धातृ अम्बे। भव भयहारी, जन-हितकारी, सुखदा जगदम्बे॥ ॥ जयति जय गायत्री माता...॥ भय हारिणी, भवतारिणी, अनघेअज आनन्द राशि। अविकारी, अखहरी, अविचलित, अमले, अविनाशी॥
॥ जयति जय गायत्री माता...॥

कामधेनु सतचित आनन्द जय गंगा गीता।
सविता की शाश्वती, शक्ति तुम सावित्री सीता॥
॥ जयति जय गायत्री माता...॥

ऋग, यजु साम, अथर्व प्रणयनी, प्रणव महामहिमे। कुण्डलिनी सहस्त्र सुषुमन शोभा गुण गरिमे॥ ॥ जयति जय गायत्री माता...॥

स्वाहा, स्वधा, शची ब्रह्माणी राधा रुद्राणी।

जय सतरूपा, वाणी, विद्या, कमला कल्याणी॥
॥ जयति जय गायत्री माता...॥

जननी हम हैं दीन-हीन, दु:ख-दरिद्र के घेरे।

यदिप कुटिल, कपटी कपूत तउ बालक हैं तेरे॥

॥ जयित जय गायत्री माता...॥

स्नेहसनी करुणामय माता चरण शरण दीजे। विलख रहे हम शिशु सुत तेरे दया दृष्टि कीजे॥ ॥ जयति जय गायत्री माता...॥

काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव द्वेष हरिये।
शुद्ध बुद्धि निष्पाप हृदय मन को पवित्र करिये॥
॥ जयति जय गायत्री माता...॥

तुम समर्थ सब भांति तारिणी तुष्ट-पुष्ट द्वाता।
सत मार्ग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता॥
॥ जयति जय गायत्री माता...॥

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता।
सत् मारग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता॥
॥ जयति जय गायत्री माता...॥